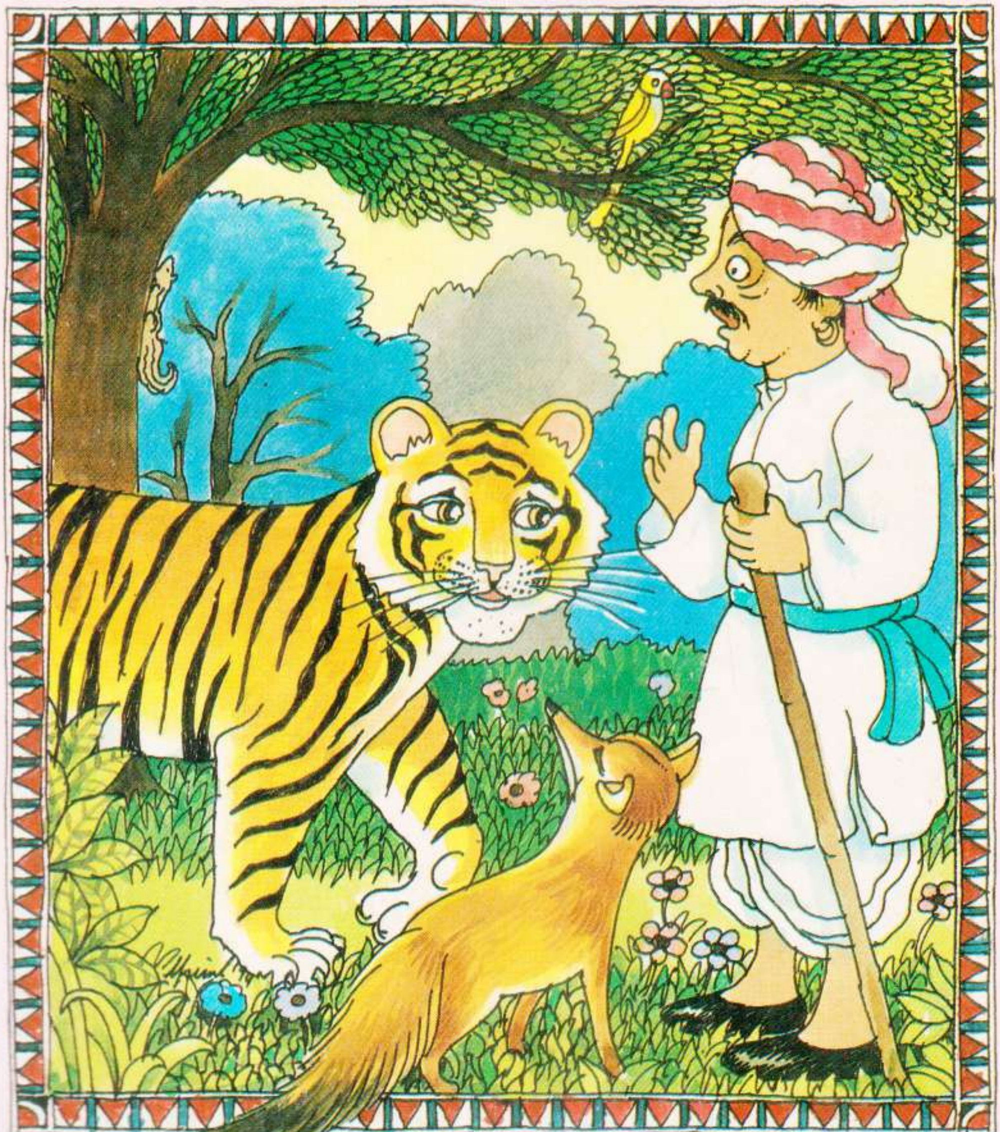
पूरक पुस्तकमाला

1

कथा रत्न



पूरक पुस्तकमाला

1

कथा रत्न

विनीता कृष्णा



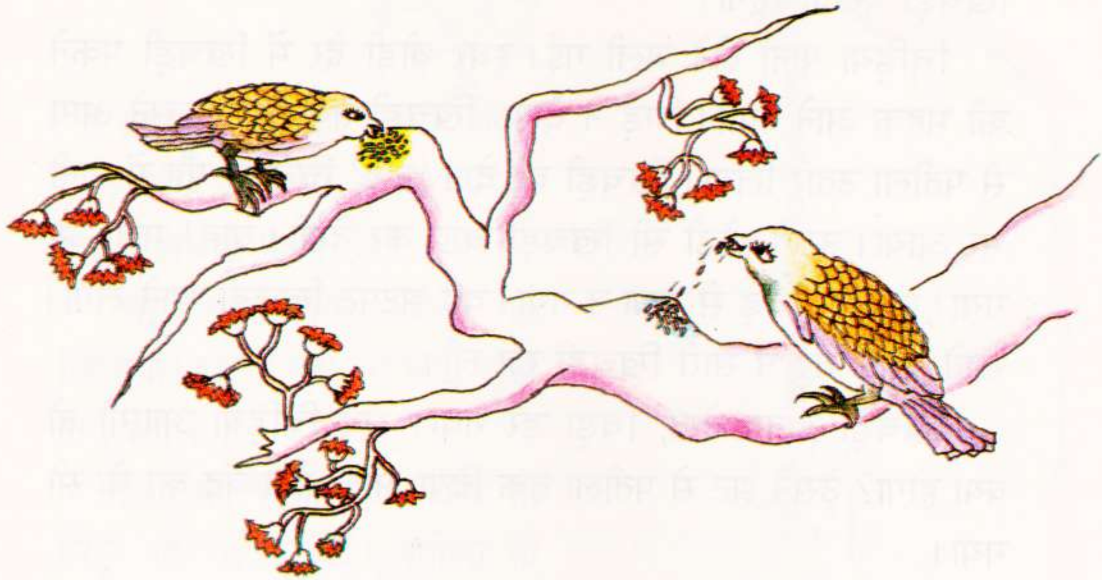
चित्रण
अरविन्दर

रत्न सागर

कथा सूची



चिड़ा - चिड़िया



एक थी चिड़िया और एक था चिड़ा। चिड़ा बहुत लालची था। खाने की चीज़ देखते ही झट से खाने लगता। सभी उसे 'चट्टू' कहते थे।

एक दिन चिड़िया को कुछ दाल के दाने मिले। चिड़ा भी चोंच भर कर चावल लाया। चिड़ा आते ही कुट-कुट कर चावल खाने लगा।

चिड़िया ने रोका, "ठहर, चट्टू! चावल-दाल मिला कर खिचड़ी बनाते हैं!"

"अरे हाँ! खिचड़ी तो बहुत मज़ेदार होती है! चल बनाते हैं।" चिड़ा खुश हो कर बोला।

चिड़िया ने दाल-चावल धोए। चिड़े ने लकड़ियाँ इकट्ठी कर आग जलाई। पतीले में आग पर खिचड़ी पकने लगी।

चिड़िया बोली, "चिड़े, जा पानी लेकर आ। फिर खिचड़ी खाएँगे।"

चिड़े ने टालमटोल की, ''मैं तो थक गया हूँ। पानी तू ले आ। मैं खिचड़ी देखता रहूँगा।''

चिड़िया पानी लेने चली गई। इधर थोड़ी देर में खिचड़ी पकने की महक आने लगी। चिड़े ने देखा, खिंचड़ी तैयार थी। उसने आग से पतीला उतार लिया। खिचड़ी को देख 'चट्टू' चिड़े के मुँह में पानी भर आया। उसने थोड़ी सी खिचड़ी चख कर देखी। वाह! मज़ा आ गया! अब तो चिड़े से रुका न गया। वह झटपट खिचड़ी खाने लगा। खाते-खाते चट्टू ने सारी खिचड़ी खा ली।

खिचड़ी खतम देख, चिड़ा डर गया। अब चिड़िया आएगी तो क्या होगा? उसने झट से पतीला ढक दिया और आँख बंद कर के सो गया।





इतने में चिड़िया पानी लेकर गई। उसने चट्टू को उठाया, "उठ चट्टू! खिचड़ी खाते हैं।"

चट्टू हड़बड़ाया, "आ गई चिड़िया! चल! मुझे भी बड़ी भूख लग रही है।"

चिड़िया ने ढक्कन हटाया तो हैरान रह गई, "चट्टू! पतीला तो खाली है। सारी खिचड़ी किसने खाई?"

"मैं तो सो रहा था। खिचड़ी कोई और खा गया होगा।" चिड़े ने झट कहा।

चिड़िया ने कहा, "देख चट्टू, तुझे धागे से लटकना पड़ेगा — अगर तूने झूठ बोला होगा तो धागा टूट जाएगा।"

चिड़िया ने एक मोटा सा धागा गड्ढे के ऊपर पेड़ से बाँध दिया।

चिड़े को डर लग रहा था। पर चिड़िया के बार-बार कहने पर वह धागे से लटक गया।

चिड़े का पेट भरा था। उसके वजन से धागा टूट गया और चिड़ा गड्ढे में गिर गया। वह रोने लगा।

चिड़िया बोली,

सुन मेरे चट्टू सुन मेरी बात, लालच बुरी है झूठ है पाप।
खिचड़ी खाई बोला झूठ, सच का धागा गया है टूट।

चिड़ा गिड़गिड़ाने लगा, "चिड़िया, मुझे माफ़ कर दे। चिड़िया मुझे बचा ले।"

चिड़े का रोना और माफ़ी माँगना सुन, चिड़िया को दया आ गई। चिड़िया एक पक्का धागा लेकर आई और गड्ढे में लटका कर टहनी से बाँध दिया। चिड़ा उसे पकड़ कर गड्ढे से बाहर आ गया।

ऊपर आकर, चिड़ा खुशी से गाने लगा,

बात कहूँ जो सच्ची है, चिड़िया मेरी अच्छी है।
मैंने सारी खिचड़ी खाई, फिर भी मेरी जान बचाई।
अब से मैं भी अच्छा हूँ, लालची नहीं मैं सच्चा हूँ।

चिड़िया चिड़े का गाना सुन कर खुश हो गई।

पढ़ो और बताओ

1. चिड़े को सब 'चट्टू' क्यों कहते थे?
2. चिड़ा पानी लेने क्यों नहीं गया?
3. चिड़ा धागे से लटकने में क्यों डर रहा था?
4. चिड़िया ने चिड़े को क्यों बचा लिया?
5. चिड़िया में कौन-कौन से गुण थे?

सोचो और करो

जानवरों को उनकी बोलियों से मिलाओ।

कुत्ता	बिल्ली	मुर्गा	गाय	गधा
बाँ बाँ	कुकड़ू कूँ	म्याँऊ म्याँऊ	ढेंचूँ ढेंच	भौं भौं

आओ और जाओ

चौधरी रतन सिंह एक ज़मींदार थे। उनके दो बेटे थे — होशियार सिंह और बेकार सिंह। जब चौधरी बूढ़े हो गए तो उन्होंनें दोनों बेटों को बुलाया। बड़े बेटे होशियार सिंह को दिए दस खेत और दस नौकर। छोटे बेटे बेकार सिंह को भी दिए दस खेत और दस नौकर। चौधरी ने कहा, "होशियार और बेकार! जाओ, अपने-अपने खेत सँभालो और अपने-अपने घर चलाओ।"

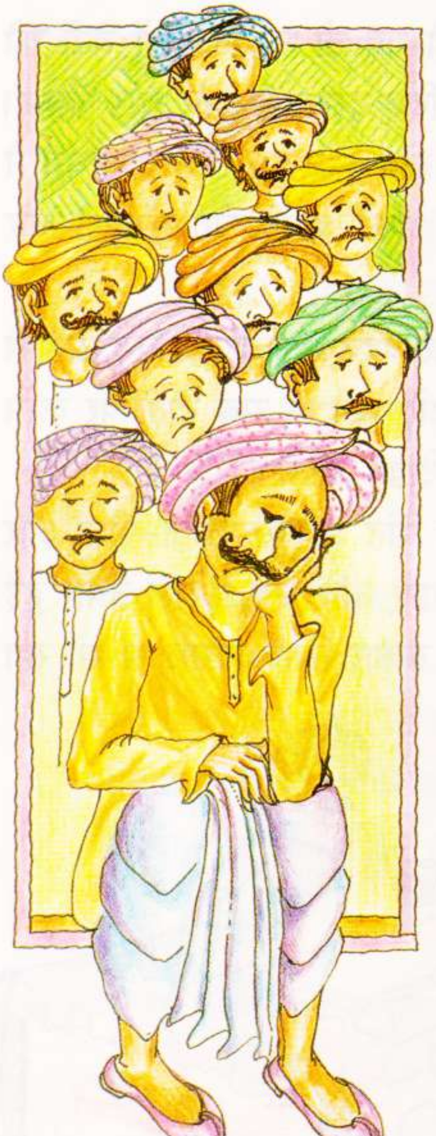
बेकार सिंह खेत और नौकर पा कर बहुत खुश हुआ। वह ठाठ से बैठ गया और नौकरों से बोला, "जाओ, सब के सब खेतों पर काम करो। पौधे लगा कर मुझे बुलाना, मैं देखने आऊँगा।"

नौकर खेतों पर चले गए। बेकार सिंह मज़े से खाता-पीता और घूमता। नौकरों ने खेत जोता, पौधे लगाए और जब फ़सल तैयार हुई तो फिर बेकार सिंह को बुलाने गए। बेकार सिंह आराम से सो रहा



था। उसने कहा, "जाओ, फ़सल पक गई है तो उसे काट दो, और काट कर अच्छे दामों में बेच देना।"

नौकरों ने फ़सल काटी, बेची और पैसे बेकार सिंह को दे दिए। बेकार सिंह बड़ा खुश हुआ। घर बैठे पैसे मिल गए, न काम करना पड़ा न कुछ।



इस तरह बेकार सिंह घर से बैठे-बैठे हुकुम चलाता और नौकर सारा काम करते। धीरे-धीरे नौकरों ने काम करना कम कर दिया। मर्जी से खेतों पर जाते, थोड़ा काम करते और ज्यादा आराम। फ़सल आधी जानवर खा जाते, आधी जिस भाव बिकती बेच देते। ऐसे बेकार सिंह की हालत खराब होने लगी। उसे एक-एक करके खेत बेचने पड़े। वह परेशान हो नौकरों को डाँटता और फटकारता। नौकर दुखी रहते। उन्हें खाने की भी कमी होने लगी। उधर होशियार सिंह भी खेत और नौकर पा कर बड़ा खुश हुआ। उसने नौकरों से कहा, "सुबह-सुबह इकट्ठे खेत पर चलेंगे।" वह नौकरों के साथ मिल कर हर काम करता। अपनी देख-रेख में सारे खेत जुतवाता, बढ़िया दाने



बोता। उसके साथ नौकर खूब मेहनत से काम करते।

फ़सल पक कर तैयार हुई तो होशियार सिंह ने अच्छे दामों में बेची। फ़सल का कुछ हिस्सा नौकरों को भी दिया।

इस तरह मेहनत व मिल-जुल कर काम करने से होशियार सिंह बड़ा धनवान हो गया। उसके नौकर भी खुश थे। वे भी अमीर हो गए। सभी नौकर उसके स्वभाव से खुश थे। वे ईमानदारी व मेहनत से काम करते। होशियार सिंह भी खुश था।

एक दिन बेकार सिंह परेशान और दुखी अपने पिता चौधरी रतन सिंह के पास गया। उसकी सूरत देख चौधरी ने पूछा, "क्या बात है बेटा, ऐसे फटेहाल और दुखी क्यों हो?"

बेकार सिंह ने मुँह लटकाए अपनी कहानी सुना दी। इतने में होशियार सिंह भी आ गया। होशियार सिंह के साथ-साथ नौकर फलों के टोकरे ले कर आए। पिता को फल, सब्जी सब देकर होशियार सिंह भी बैठ गया। उसका चमकता चेहरा देख रतन सिंह खुश हुआ।

रतन सिंह ने कहा, "देखो, बेकार सिंह, मैंने तुम दोनों को बराबर खेत और नौकर दिए थे। अब अपने में और होशियार सिंह में फर्क देखो। यही फर्क है 'आओ' और 'जाओ' में।"

"आओ और जाओ!" बेकार सिंह ने हैरान होकर पूछा।

"हाँ," रतन सिंह ने समझाया, "तुमने हमेशा नौकरों से कहा 'जाओ खेत पर काम करो' और होशियार सिंह ने 'आओ खेत पर काम करें' कहा। तुमने खुद मौज करना चाहा और तुम्हारे भाई ने मेहनत और समझदारी से अपना काम सँभाला। बस, इसी 'आओ' और 'जाओ' से यह फर्क आ गया।

बेकार सिंह ने बात समझ ली और 'जाओ काम करो' को बदल कर 'आओ काम करें' कहने का फ़ैसला कर लिया।

पढ़ो और बताओ

1. **खाली स्थान भरो।**
   - (क) चौधरी के बहुत सारे ________ थे।
   - (ख) जब चौधरी बूढ़ा हो गया तो उसने अपने ________ को बुलाया।
   - (ग) सुबह-सुबह इकट्ठे ________ पर चलेंगे।
   - (घ) फ़सल का कुछ हिस्सा ________ को भी दिया।
   - (ङ) होशियार सिंह ने कहा, "________ खेत पर काम करें।"
2. **अगर तुम बेकार सिंह की जगह पर होते तो क्या करते?**

सोचो और करो

क्या तुमने कभी खेत देखें हैं? खेत में काम करने वाले को किसान कहते हैं। सोच कर तीन चीज़ों के नाम बताओ जो खेतों में उगती हैं।

ठगों से बदला



घोड़ों का एक व्यापारी था। वह बहुत होशियार था। एक बार वह बीमार पड़ गया। उसने अपने बेटे मोहन को एक घोड़ा बेचने भेजा।

मोहन घोड़ा लेकर शहर की तरफ़ चल दिया। रास्ते में उसे एक ठग मिला। ठग ने कहा, ''कहो भई, कहाँ जा रहे हो?''

मोहन ने जवाब दिया, ''घोड़े को शहर बेचने जा रहा हूँ।''

ठग ने कहा, ''मूर्ख! यह तो बकरी है। तू इसे घोड़ा कहता है।''

मोहन बोला, ''जा, जा, मूर्ख तू होगा।''

मोहन थोड़ी दूर गया तो उसे दूसरा ठग मिला। वह कहने लगा, ''कहो लड़के, इतनी धूप में बकरी को लेकर कहाँ जा रहे हो?''

मोहन को बड़ा गुस्सा आया, ''अरे, दिखाई नहीं देता? यह बकरी नहीं है, मेरा घोड़ा है। मैं इसे बेचने शहर जा रहा हूँ।''

आगे चलने पर उसे एक तीसरे ठग ने आवाज़ दी, ''अरे भई, यह बकरी अगर बेचने जा रहे हो तो मुझे बेच दो। मैं बीस रुपए दूँगा।''

मोहन ने गुस्से के मारे कोई जवाब नहीं दिया। पर वह मन में सोचने लगा, 'अगर अब किसी ने इस घोड़े को बकरी कहा तो मैं इसे बेच दूँगा। ऐसे घोड़े को लेकर इतनी दूर शहर जाने का क्या फायदा?'

सोचते-सोचते मोहन घोड़ा छोड़ आगे बढ़ गया। चौथे ठग ने पुकारा, "लड़के, तेरी बकरी पीछे रह गई। पकड़ ले।"

इतना सुनना था कि मोहन ने गुस्से में आकर उस ठग को बीस रुपए में घोड़ा बेच दिया।

घर वापस आकर उसने अपने पिता को बीस रुपए दिए और सारी बात सुनाई। व्यापारी समझ गया कि ठगों ने मिल कर मोहन को लूट लिया। उसने ठगों से बदला लेने की सोची।

अगले दिन उसने अपने एक नौकर को एक बकरी दी। बकरी के मुँह में एक चाँदी का सिक्का डाल दिया। सारी बात समझा दी।

नौकर बकरी को कंधे पर उठा के चल दिया। रास्ते में पहला ठग





मिला। उसने कहा, "लड़के, ये क्या? बकरी को कंधे पर क्यों उठा रखा है?"

नौकर बोला, "यह बकरी बहुत कीमती है। इसलिए मैं इसे बड़े ध्यान से बेचने जा रहा हूँ।"

"अगर यह इतनी कीमती है तो बेच क्यों रहे हो?" दूसरा ठग बोला।

"अरे, इससे तो मुझे हज़ारों रुपए मिलेंगे। यह बड़ी जादुई बकरी है।" कह कर नौकर आगे चल पड़ा।

ठग उसके पीछे चले। रास्ते में उन्होंने फिर कहा, "लड़के, इस बकरी में ऐसा क्या जादू है जो तुम्हें हज़ारों रुपए मिलेंगे?"

नौकर बोला, "नहीं मानते तो देख लो।" उसने बकरी को कंधे से उतारा। उसके सिर पर खूब प्यार से हाथ फेरा।

बकरी मिमियाने लगी और उसके मुँह से चाँदी का सिक्का गिर गया। ठग हैरान हो गए। वह बोले, "इतनी अच्छी बकरी है तो बेचते क्यों हो?"

नौकर बोला, "मेरा मालिक बहुत बीमार है। उसके इलाज के लिए ढेर सारे रुपए चाहिए। हम बकरी के दिए सिक्कों के लिए ज्यादा दिन रुक नहीं सकते। मालिक मर जाएगा।" इतना कह कर वह रोने लगा।

ठगों ने आपस में सलाह की और बकरी दो हज़ार रुपए में खरीद ली।

नौकर रुपए लेकर व्यापारी के पास गया। व्यापारी ने अपनी होशियारी से ठगों को सबक सिखा दिया।

पढ़ो और बताओ

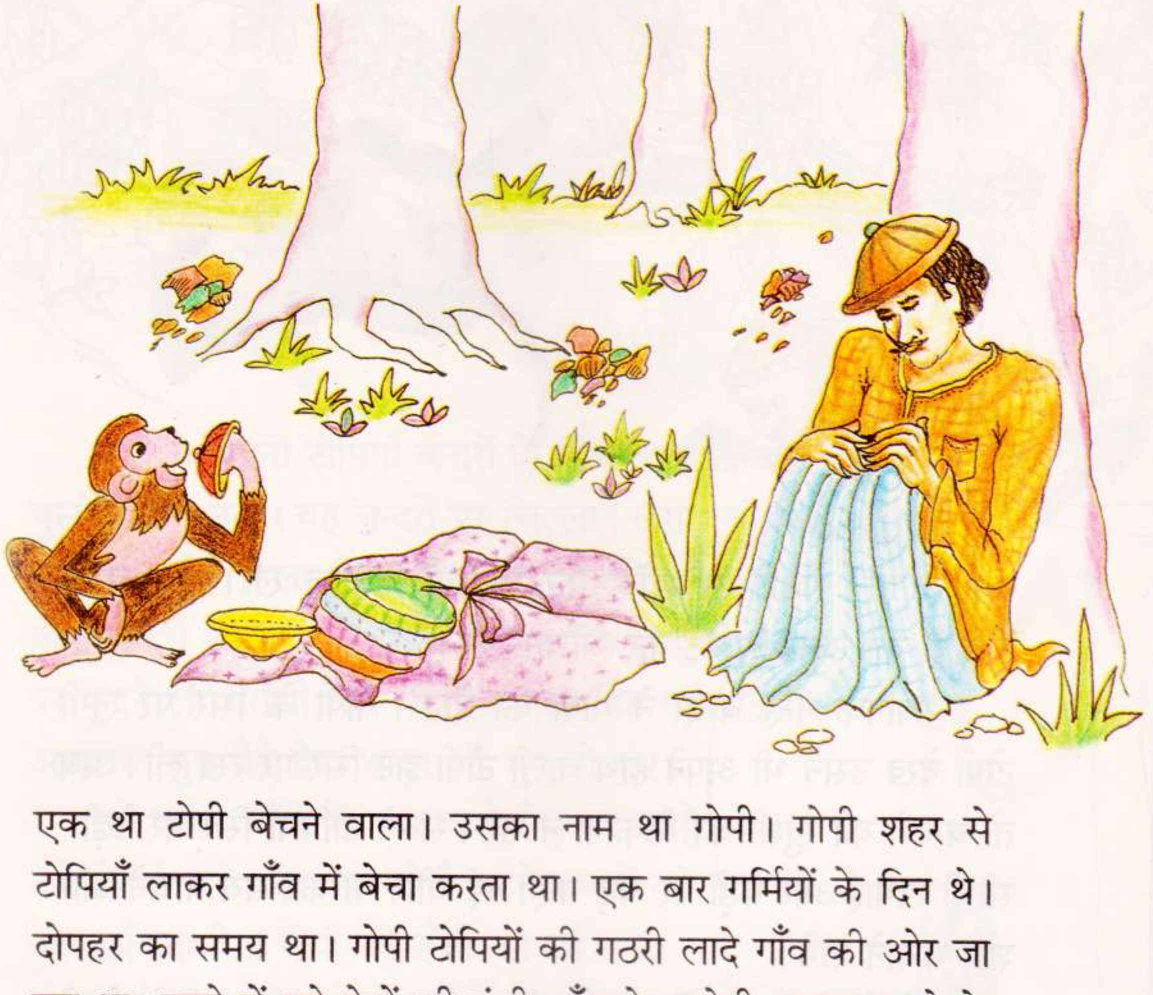
तुम हमेशा प्रश्नों के उत्तर बनाते हो। आज नीचे दिए गए उत्तरों के प्रश्न बनाओ।

1. व्यापारी बहुत होशियार था।
2. व्यापारी ने अपने बेटे को घोड़ा बेचने भेजा।
3. ठगों ने घोड़े को बकरी बताया।
4. व्यापारी ने बकरी के मुँह में चाँदी का सिक्का रख दिया।
5. व्यापारी ने अपनी होशियारी से ठगों को सबक सिखाया।

सोचो और करो

अगर तुम को मुँह से चाँदी का सिक्का निकालने वाली बकरी मिल जाए तो तुम क्या करोगे? पाँच वाक्य लिखो।

मेरी टोपी — तेरी टोपी



एक था टोपी बेचने वाला। उसका नाम था गोपी। गोपी शहर से टोपियाँ लाकर गाँव में बेचा करता था। एक बार गर्मियों के दिन थे। दोपहर का समय था। गोपी टोपियों की गठरी लादे गाँव की ओर जा रहा था। रास्ते में घने पेड़ों की ठंडी छाँव देख गोपी आराम करने के लिए रुक गया। उसने टोपियों की गठरी एक तरफ़ रख दी और खुद पेड़ के सहारे बैठ गया। थोड़ी देर में गोपी को नींद आ गई।

पेड़ों के उस झुरमुट पर बहुत सारे बन्दर रहते थे। एक नन्हा बन्दर उछलते-कूदते गठरी के पास आ गया। गठरी के एक कोने से दिखती लाल टोपी को उसने खींच निकाला। नन्हा बन्दर टोपी को उलटने-पलटने लगा। उसे देख एक-एक करके सारे बन्दर पेड़ों से नीचे आ



गए। उन्होंने गठरी से खींच कर टोपियाँ निकाल लीं। सब बन्दर टोपियों को उलट-पलट कर जाँचने लगे।

अचानक नन्हे बन्दर ने गोपी को देखा। गोपी के सिर पर लगी टोपी देख उसने भी अपने हाथ वाली टोपी झट सिर पर रख ली। अब तो बन्दरों की खुशी का ठिकाना न रहा। सबने टोपियाँ सिर पर टेढ़ी-सीधी लगाईं और पेड़ों पर चढ़ गए। नई चीज़ पा कर सब नाचने और शोर मचाने लगे।

इतने में गोपी की नींद खुल गई। उसने जब अपनी गठरी देखी तो घबरा गया। गठरी में तो एक भी टोपी नहीं थी। गोपी सोचने लगा, 'अगर किसी को मेरी टोपियाँ चुरानी थीं तो वह पूरी गठरी ही ले जाता। गठरी में से एक-एक टोपी ले जाने वाला कौन चोर होगा?'

गोपी को दूर-दूर तक कोई भी दिखाई न दिया। अचानक बन्दरों के शोर से उसका ध्यान ऊपर गया। पेड़ों की डालियों पर कूदते, उछलते, टोपी पहने बन्दरों को देख गोपी हैरान हो गया।



गोपी ने अपनी टोपियाँ बन्दरों के सिरों पर देखीं तो गुस्से से भर उठा। वह बन्दरों पर चिल्लाने लगा। बन्दर भी हाथ-पाँव हिला-हिला कर दाँत किटकिटाने लगे। गोपी बन्दरों को पकड़ने दौड़ा। वे एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूदने लगे। गोपी थक कर एक तरफ़ बैठ गया। उसे अचानक चुप बैठे देख बन्दर भी चुप हो गए।

सारे बन्दर गोपी के पास वाले पेड़ पर इकट्ठे होकर उसे देखने लगे। ढेर सारे टोपी पहने बन्दरों को अपनी ओर झाँकता देख गोपी को हँसी आ गई।

उसने हाथ के इशारे से नन्हे बन्दर को बुलाया। नन्हे बन्दर ने वैसे ही इशारे से गोपी को बुलाया। गोपी जैसे हाथ हिलाता, मुँह बनाता, नन्हा बन्दर और उसके पीछे सारे बन्दर वैसे ही करते। नकल का खेल करते-करते गोपी को एक चाल सूझी। उसने अपनी टोपी पर हाथ फेरा। सारे बन्दरों ने अपनी-अपनी टोपी पर हाथ फेरा।

गोपी ने टोपी सिर से उतारी। बन्दरों ने भी टोपियाँ



सिर से उतार लीं। गोपी ने टोपी दूर फेंक दी। बन्दरों ने भी झट टोपियाँ उतार कर नीचे फेंक दीं। गोपी ने फटाफट सारी टोपियाँ इकट्ठी कीं, गठरी बाँधी और झटपट वहाँ से भाग लिया।

पढ़ो और बताओ

1. गोपी क्या काम करता था?
2. गोपी रास्ते में आराम करने क्यों रुक गया?
3. सबसे पहले टोपी किसने निकाली?
4. गोपी ने अपनी टोपियाँ बन्दरों से कैसे वापस लीं?

सोचो और करो

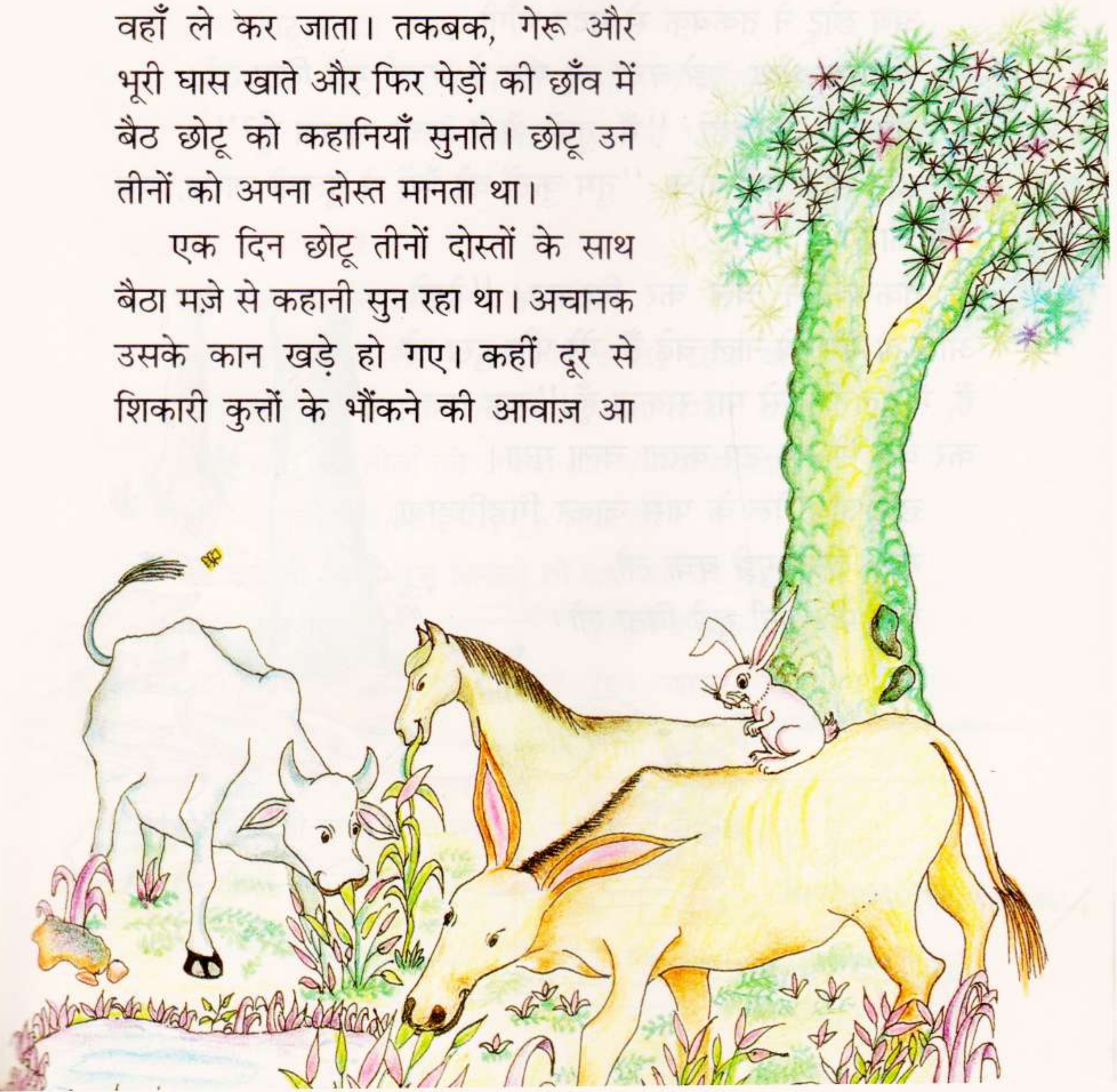
1. **इस कहानी में नन्हे बन्दर का नाम नहीं है। सोच कर उसका कोई नाम रखो।**
2. **अपने लिए एक टोपी का चित्र बनाओ।**

मेरी टोपी

अपना भरोसा

एक जंगल था। उसमें एक खरगोश रहता था। उसका नाम था छोटू। जंगल में कई जानवर घास चरने आते थे। भूरी गाय, तकबक घोड़ा और गेरू गधा रोज़ आते थे। छोटू, भूरी, तकबक और गेरू के लिए हरी-हरी घास का पता करता और उन्हें वहाँ ले कर जाता। तकबक, गेरू और भूरी घास खाते और फिर पेड़ों की छाँव में बैठ छोटू को कहानियाँ सुनाते। छोटू उन तीनों को अपना दोस्त मानता था।

एक दिन छोटू तीनों दोस्तों के साथ बैठा मज़े से कहानी सुन रहा था। अचानक उसके कान खड़े हो गए। कहीं दूर से शिकारी कुत्तों के भौंकने की आवाज़ आ



रही थी। छोटू डर गया। वह घबराकर भूरी से बोला,

भूरी, भूरी, मुझे बचा लो, पीठ पर अपनी मुझे बिठा लो।

भूरी ने पूछा, ''मैं तुम्हें कैसे बचाऊँ?''

छोटू बोला, ''तुम अपने बड़े-बड़े सींगों से कुत्तों को मार भगाना।''

भूरी ने कहा, ''आज तो सींगों पर तेल लगा है। मैं तो इनसे कुत्तों को मार नहीं सकती। अब मैं घर जाती हूँ।'' इतना कह भूरी चल पड़ी घर की ओर।

अब छोटू ने तकबक से मदद माँगी,

तकबक भैया, मुझे बचा लो, पीठ पे अपनी मुझे बिठा लो।

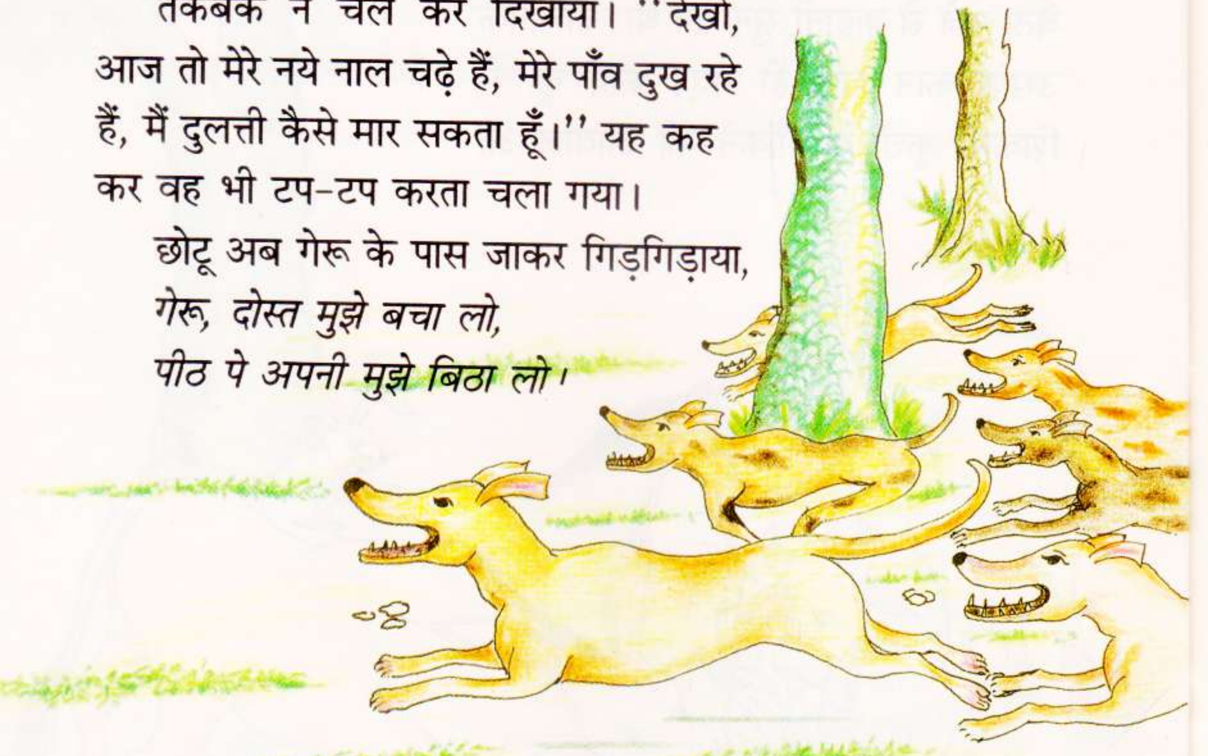
तकबक ने पूछा, ''मैं तुम्हें कैसे बचा सकता हूँ?''

छोटू सोच कर बोला, ''तुम कुत्तों को पैरों से दुलत्ती मारना, सब भाग जाएँगे।''

तकबक ने चल कर दिखाया। ''देखो, आज तो मेरे नये नाल चढ़े हैं, मेरे पाँव दुख रहे हैं, मैं दुलत्ती कैसे मार सकता हूँ।'' यह कह कर वह भी टप-टप करता चला गया।

छोटू अब गेरू के पास जाकर गिड़गिड़ाया,

गेरू, दोस्त मुझे बचा लो,
पीठ पे अपनी मुझे बिठा लो।



अब तो गेरू को भी शिकारी कुत्तों की आवाज़ सुनाई देने लगी। वह सरपट दौड़ते हुए बोला, "अरे दोस्त, मेरा मालिक मुझे बुला रहा है। मैं न गया तो मुझे डंडे पड़ेंगे।" और गेरू भी चलता बना।

छोटू ने देखा, कुत्ते सामने से भागे आ रहे हैं। वह अपने आप से बोला, "चल बेटा, जितना तेज़ भाग सकता है भाग।" छोटू तेज़ी से भाग कर दूर एक घनी झाड़ी में जा छिपा।

शिकारी कुत्ते उसे ढूँढ न पाए और चले गए।

आज छोटू समझ गया,

सब दे सकते हैं मौके पे धोखा,
सबसे पक्का है अपना भरोसा।

पढ़ो और बताओ

1. सही शब्द पर निशान (✔) लगाओ।

(क) एक जंगल में एक खरगोश/डाक्टर रहता था।

(ख) छोटू हरी-हरी घास/टॉफ़ी का पता लगाता था।

(ग) छोटू उन तीनों को अपना दोस्त/चाचा मानता था।

(घ) अपनी पीठ/सिर पर मुझे बिठा लो।

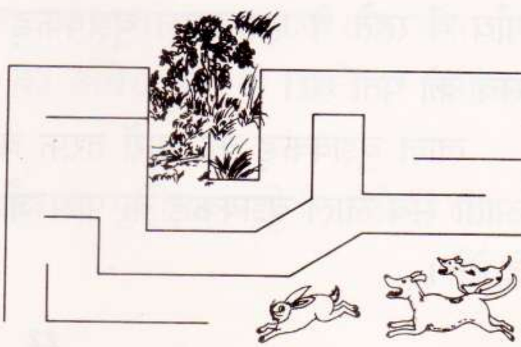
2. यह कहानी अगर तुम लिखते तो जानवरों को क्या नाम देते?

(क) खरगोश __________ (ग) घोड़ा __________

(ख) गाय __________ (घ) गधा __________

सोचो और करो

छोटू को जंगली कुत्तों से बचना है। उसे झाड़ी तक पहुँचा दो।



लाल बुझक्कड़



एक था बर्रा गाँव। बर्रा आस-पास के सारे गाँवों में मशहूर था। बर्रे गाँव में रहते थे एक लाल बुझक्कड़। उन्हीं से बर्रा गाँव के बारे में सब को पता था।

लाल बुझक्कड़ का चारों तरफ़ बड़ा नाम था। कोई भी मुश्किल आती सब लाल बुझक्कड़ के पास जाते और वह कोई न कोई सुझाव दे देते।

एक दिन सुबह-सुबह बर्रा गाँव में शोर मच गया। गाँव के बीच जाती सड़क पर दो-दो हाथ के गोल निशान बने हुए थे। निशान गाँव की कच्ची सड़क पर बराबर, एक के बाद एक लगे थे। ऐसे बड़े गोल निशान तो आज तक किसी ने भी नहीं देखे थे।

बूढ़े अब्बू दादा, जिनकी सारी मूँछें, दाढ़ी व सिर के बाल सफ़ेद थे, एक-एक निशान को देख गए। ऐसे अजीब धसे हुए निशान तो उनकी याद में कभी बर्रा गाँव की ज़मीन पर नहीं पड़े थे।

मन्दिर की पुनिया नानी भी आ गई। सारी सड़क चल कर देखी। पर वह भी कह न पाई कि क़ौन सी चीज़ ऐसे गोल गड्ढे, रात-रात में बना कर चली गई।

नए कोतवाल साहब सब के घरों पर पूछताछ कर चुके। न किसी के यहाँ कोई आया और न कोई गया। बच्चों को तो शोर मचाने का अच्छा बहाना मिल गया। वह टोली बना हर गोले के पास खड़े हो कर गाने लगे,

गोला गोल
गोला गोल
गोले की कोई
न जाने पोल।

शाम होने को आई। बात बढ़ते-बढ़ते सारे गाँव में एक तमाशा बन गई। सभी आपस में कहने लगे कि कल रात तो यह बड़े-बड़े गोलों वाली बला आई और टल गई। जाने आज रात और क्या हो जाए। इसलिए इसका पता रात का अँधेरा होने से पहले ही लगाना चाहिए।

अब्बू दादा ने कहा, "सारे गाँव पर मुसीबत पड़ी है, ऐसे में लाल बुझक्कड़ कहाँ सो रहे हैं?"

इतने में दूर से लाल बुझक्कड़ आते दिखाई दिए। गाँव वालों की परेशानी का पता चलते ही वह चश्मा नाक पर चढ़ा, ध्यान से झुक-झुक कर निशान देखने लगे। खूब ध्यान से नाप तोल कर आस-पास नज़र घुमा कर उन्होंने पूछा, ''बोलो, गाँव के पास के जंगलों में कौन-कौन से जानवर रहते हैं?''

बच्चों ने झट जवाब दिया, ''नील गाय, हिरन, जंगली कुत्ते, ···।''

''लेकिन इनमें से तो किसी के पैर इतने बड़े नहीं हैं।'' अब्बू दादा ने बीच में कहा।

''बिल्कुल ठीक कहा दादा आपने।'' लाल बुझक्कड़ ने सिर हिलाया, ''इसका मतलब इनमें से किसी शैतान जानवर ने पैर में कुछ बाँध रखा था। इस नाप का गोला क्या हो सकता है?''

''यह तो पूरा चक्की का एक पाटा है।'' नानी बोली। सब औरतें हँसने लगीं।

पर लाल बुझक्कड़ ने खुश हो कर कहा, ''बिल्कुल सही कहा आपने, नानी। यह तो कोई हिरन पाँव में चक्की बाँध पूरी सड़क पर कूद कर गया है।''

इतनी बड़ी पहेली का इतना सरल और मज़ेदार हल सुन, बच्चे तालियाँ बजा कर कूदने लगे,

लाल बुझक्कड़ बूझिया,
और न बूझा कोई।
पैर में चक्की बाँध कर,
हिरना कूदा होई।

गाँव वाले चैन की साँस ले अपने-अपने घरों को चले गए।

बच्चो, लाल बुझक्कड़ की बात बर्रा गाँव वाले तो मान गए। पर क्या तुमने मानी? नहीं न? सोच कर बताओ कि इस तरह के निशान किसके हो सकते हैं?



बड़ी सी गेंद के, ऊँट के या हाथी के?

कहीं गीली मिट्टी पर बने निशानों को ध्यान से देखो। नन्हीं चिड़ियाँ, रेंगते केंचुए, साइकिल के पहिए, बाबा की खड़ाऊँ, व चाचा के जूते, सब निशान अलग-अलग दिखाई देंगे।

निशानों से पता चलेगा कि इस जगह से कौन गुज़रा। और ऐसे तुम लाल बुझक्कड़ के भी गुरू बन जाओगे और सही-सही बता सकोगे। आज घर में कौन आया, कौन गया, तुम्हारे घर के आसपास कौन-कौन से जानवर रात को आए या गए। है न मज़ेदार सुझाव!

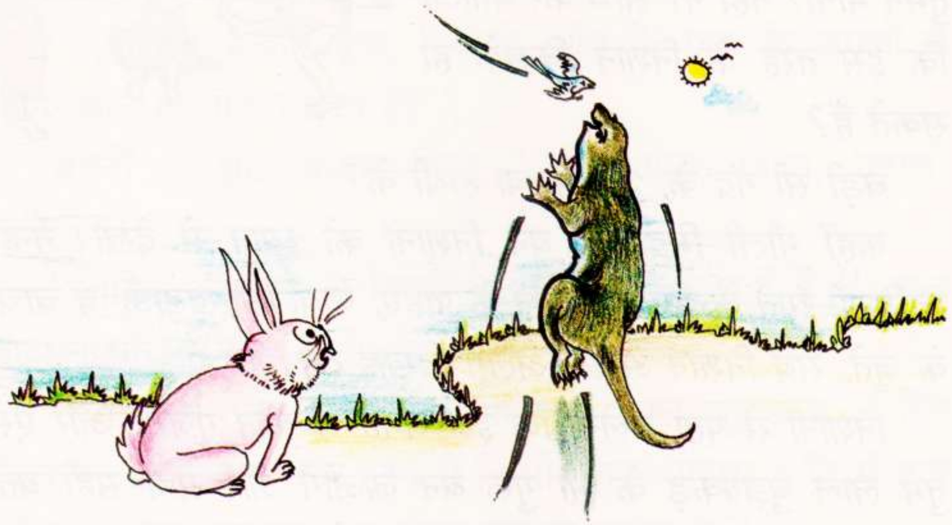
पढ़ो और बताओ

1. बर्रा आस-पास के सारे गाँवों में मशहूर क्यों था?
2. लाल बुझक्कड़ का चारों तरफ़ बड़ा नाम था। क्यों?
3. एक दिन सुबह-सुबह गाँव में शोर क्यों मच गया?
4. बूढ़े अब्बू दादा पर दो वाक्य लिखो।
5. शाम होने से पहले निशानों का राज़ जान लेना क्यों ज़रूरी था?

सोचो और करो

थोड़ी सी गीली मिट्टी, आटा या प्लास्टिसीन लो। उसमें अलग-अलग वस्तुएँ, जैसे बटन, सिक्के, छोटे खिलौने, आदि दबा कर सब के निशान बनाओ।

असली विद्या



एक था ऊदबिलाव। वह बहुत घमंडी था। वह हमेशा अपनी तारीफ़ किया करता था। उसका मित्र था एक खरगोश। खरगोश रोज़ उसकी डींगें सुनता था।

ऊदबिलाव कहता, ''मैं तो बीस तरह की कलाएँ जानता हूँ।''

बेचारा खरगोश चुप रहता। 'मैं तो एक ही कला जानता हूँ।' वह सोचता।

ऊदबिलाव रोज एक न एक कला खरगोश को दिखाता। तैरने की कला, उछलने की कला, उड़ती चिड़ियों तक उड़ने की कला, उछलती मछलियों को पकड़ने की कला, मनुष्य की भाषा की कला, आदि उसको बताता।

खरगोश को तो केवल अपनी जान बचाने की कला आती थी। वह तो दिखाने वाली थी नहीं। वह तो समय पड़ने पर ही दिखा सकता था। इसलिए वह ऊदबिलाव की डींगें सुनता और चुप रहता।

रोज़ की तरह, एक दिन खरगोश ऊदबिलाव से मिलने गया। बहुत देर तक जब ऊदबिलाव नहीं आया तो उसे चिन्ता होने लगी। वह उसे खोजने निकला।

जब खरगोश नदी किनारे पहुँचा तो उसने देखा कि ऊदबिलाव एक मछुए के जाल में फँसा हुआ है। खरगोश को देखते ही ऊदबिलाव रोने लगा, "दोस्त-दोस्त, मुझे बचा लो।"

खरगोश बोला, "रोते क्यों हो, तुम बीस तरह की कलाएँ जानते हो। अपनी कलाओं से अपनी जान बचा लो।"

ऊदबिलाव गिड़गिड़ाया, "मुझे तो इस वक्त कोई भी कला याद नहीं आ रही। तुम्हीं कुछ बताओ।"

"मैं तो सिर्फ़ एक ही कला जानता हूँ और वह भी मामूली," खरगोश ने जवाब दिया, "मैं तुम्हें कैसे बचाऊँगा?"

ऊदबिलाव रोने लगा, "दोस्त, मुझे इस मुश्किल में मत छोड़ो। मुझे बचा लो।"

खरगोश ने सोच कर कहा, "देखो मित्र, तुम ऐसे सो जाओ, जैसे मर गए हो। तुम्हें मरा समझ कर मछुआ फंदा खोल देगा। बस, तुम भाग जाना।"

ऊदबिलाव आँख मूँद कर लेट गया। इतने में मछुआ आ गया। मछुए ने ऊदबिलाव को मरा जान जाल से बाहर निकाल दिया और रस्सी ढूँढने झाड़ियों की तरफ़ गया।



खरगोश हैरान देख रहा था। 'ऊदबिलाव भाग क्यों नहीं रहा?' उसने उसे आवाज़ दी मगर ऊदबिलाव तो सो गया था।

इतने में मछुआ वापस आता दिखा। मछुए को आता देख और ऊदबिलाव को सोया देख, खरगोश दोस्त की जान बचाने के लिए मछुए के सामने से लँगड़ाता हुआ निकला। खरगोश को देख मछुआ उसे पकड़ने उसके पीछे भागा। खरगोश मछुए को अपने पीछे-पीछे काफी दूर ले गया। फिर उसे धोखा दे तेज़ी से वापस आ गया।

इतने में ऊदबिलाव जाग गया और झट से नदी में कूद गया।

मछुए को न ऊदबिलाव मिला न खरगोश। उस दिन से ऊदबिलाव ने डीगें हाँकना छोड़ दिया।

पढ़ो और बताओ

खाली स्थान भरो।

(क) ऊदबिलाव बहुत ____________ हाँकता था।

(ख) ____________ एक मछुए के जाल में फँसा था।

(ग) तुम्हें ____________ समझ कर मछुआ फंदा खोल देगा।

(घ) मछुआ ____________ ढूँढने झाड़ियों की तरफ़ गया।

(ङ) मछुए को न ____________ मिला, न खरगोश।

सोचो और करो

ऊदबिलाव को अंग्रेज़ी में OTTER कहते हैं और RABBIT खरगोश को। नीचे दिये जानवरों के हिन्दी और अंग्रेज़ी नाम जोड़ो।

शेर	ऊँट	हाथी	भालू	हिरन
BEAR	DEER	LION	CAMEL	ELEPHANT

मालिन और सुनहरा बकरा

एक मालिन ने अपने खेत में गाजरें बोईं। बीज उग आए। मालिन ने पानी और खाद दिया। गाजरें बड़ी हो गईं।

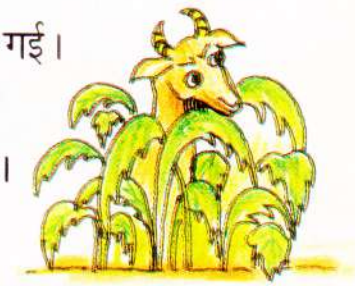
एक दिन उसके खेत में कुछ बकरियाँ और बकरे घुस गए। वे खेत उजाड़ने लगे। मालिन डंडा लेकर आई और बोली, "बकरियो! बकरियो! मेरे खेत से बाहर निकलो।"

यह सुन काली बकरी, लाल बकरी और सफ़ेद बकरी सब भागीं। पर सुनहरा बकरा न निकला। मालिन ने डंडा दिखाया, "बकरे, बकरे, चल बाहर निकल।"

बकरा आँख चमकाता, सींग उठाए उसकी तरफ़ बढ़ा।

सोने के हैं मेरे सींग, और सुनहरे मेरे बाल।
हीरे-मोती की हैं आँखें, चाँदी की है मेरी खाल।
बकरे, बकरियों का मैं राजा,
नहीं निकलता, मालिन! जा! जा!

मालिन डर गई। वह भाग कर भालू के पास गई।



भालू ने कहा, "मालिन, क्या हुआ?"

मालिन ने कहा, "भालू, मैंने खेत बनाया। मैंने गाजरें उगाईं। बकरियाँ चरने लगीं। मैं डंडा ले आई।

सारी बकरियाँ भागीं, बकरे से डर मैं भागी, भालू, भालू, तू उसे निकाल दे।"

भालू मालिन के साथ गया। उसने खेत पर पहुँच कर बकरे को

ललकारा, "बकरे, यहाँ से निकल जा, नहीं तो मैं तुझे मार डालूँगा।"

बकरा सींग हिलाता, आँखें चमकाता बोला,

सोने के हैं मेरे सींग, और सुनहरे मेरे बाल।
हीरे-मोती की हैं आँखें, चाँदी की है मेरी खाल।
बकरे, बकरियों का मैं राजा,
नहीं निकलता, भालू, जा! जा!

बकरे की डरावनी शक्ल देख भालू भी डर कर भाग गया।

मालिन भागी-भागी गीदड़ के पास गई।



गीदड़ ने पूछा, "क्या हुआ, मालिन?"

मालिन ने कहा, "गीदड़, मैंने खेत बनाया। खेत में गाजरें उगाईं। बकरियाँ खाने लगीं, मैं डंडा ले आई। सारी बकरियाँ भागीं, बकरे से डर मैं भागी।



गीदड़, गीदड़, तू उसे निकाल दे।"

गीदड़ मालिन के साथ गया। उसने खेत पर पहुँचकर बकरे को ललकारा, "बकरे, यहाँ से निकल जा नहीं तो मैं तुझे मार दूँगा।"

बकरे ने आँखें चमकाईं, सींग उठाए और बोला,



सोने के हैं मेरे सींग, और सुनहरे मेरे बाल।
हीरे-मोती की हैं आँखें, चाँदी की है मेरी खाल।
बकरे, बकरियों का मैं राजा,
नहीं निकलता, गीदड़! जा! जा।

बकरे का रौब देखकर गीदड़ भी डर कर भाग गया।

मालिन रोती हुई आगे चली कि इतने में उसे एक भँवरा मिला।





भँवरे ने पूछा, "मालिन, तू रोती क्यों है?"
मालिन ने कहा, "भँवरे मैंने खेत बनाया,
खेत में गाजरें उगाईं।
बकरियाँ खाने लगीं,
मैं डंडा ले आई।
सारी बकरियाँ भागीं,
बकरे से डर मैं भागी।
भँवरे-भँवरे तू उसे निकाल दे।"

भँवरा मालिन के साथ चला। खेत पर पहुँचकर उसने बकरे को ललकारा, "बकरे, यहाँ से निकल, नहीं तो मैं तुझे मार दूँगा।"

भँवरे की ललकार सुन बकरा सींग तानकर बोला,



सोने के हैं मेरे सींग,
और सुनहरे मेरे बाल।
हीरे-मोती की हैं आँखें,
चाँदी की है मेरी खाल।
बकरे, बकरियों का मैं राजा,
नहीं निकलता, भँवरे! जा! जा!

यह सुनकर भँवरा ज़रा भी नहीं डरा। वह 'भूँ-भूँ' करके उड़ा। उसने बकरे की नाक पर डंक मारा। बकरा रोता-चीखता भाग गया।

मालिन ने भँवरे को धन्यवाद कहा और खेत में फिर से मीठी-मीठी गाजरें उगाईं।

पढ़ो और बताओ

खाली स्थान भरो।

1. **मालिन ने पौधों को पानी और —————— दिया।**

2. ________________ की हैं आँखें, ________________ की है मेरी खाल।

3. भालू, मैनें ________________ बनाया।

4. बकरे की ________________ शक्ल देख भालू भाग गया।

5. बकरे का रोब देख कर ________________ भाग गया।

सोचो और करो

भँवरा सबसे छोटा था पर था सबसे बहादुर। वह न बकरे से डरा, न उसकी धमकियों से। यहाँ एक और छोटे से जानवर की कहानी है जो जंगल के राजा से भी नहीं डरा। सही शब्द चुन कर खाली स्थान भरो और कहानी पूरी करो।

> खरगोश, जंगल, खाना, शेर, जानवर, समझदार, मर, शिकार, मारने, कुएँ, होशियारी, परछाई, तरकीब

किसी ________________ का राजा एक शेर था। वह जानवरों का ________________ करता था। जानवरों ने तय किया कि रोज़ एक ________________ शेर का ________________ बन कर जाएगा। एक दिन एक छोटे ________________ की बारी आई। खरगोश बहुत ________________ था। उसने एक ________________ सोची। वह शेर के पास गया और उस से कहा कि कुँए में एक और ________________ रहता है। शेर भागा-भागा ________________ पर गया। उसने पानी में अपनी ________________ देखी। समझा, दूसरा शेर है। उसे ________________ के लिए वह झट से कुँए में कूद पड़ा और ________________ गया। छोटे खरगोश की ________________ से सब जानवरों की जान बच गई।

एक अनूठी पूरक पुस्तकमाला

कथा रत्न कुछ सुनी, कुछ अनसुनी कहानियों का खज़ाना है। ये कहानियाँ हमारी समृद्ध मौखिक परंपरा का हिस्सा रही हैं जिन्हें हम पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुनते-सुनाते चले आए हैं। सैकड़ों वर्ष पहले जन्मीं ये कहानियाँ देश-काल की सीमा से परे, आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए हैं।

रंग-बिरंगे चित्रों से सजी ये कथाएँ यहाँ पूरक पुस्तकमाला के रूप में संकलित हैं। प्रत्येक कहानी के अंत में दिए गए अभ्यास के लिए रोचक प्रश्न, बच्चों को कहानी पढ़ने से आगे कुछ सोचने और कुछ करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

हमें विश्वास है कि इन पुस्तकों के माध्यम से भाषा के प्रति बच्चों की संवेदनशीलता और कुशलता तो बढ़ेगी ही, साथ ही उनमें साहित्य के लिए रुचि भी उत्पन्न होगी।

पहला संस्करण 1995

रत्न सागर प्रा॰ लि॰
विराट भवन, मुखर्जी नगर कमर्शियल कॉम्पलैक्स
दिल्ली 110009 • फोन : 7122505, 7216094
फैक्स : 011-7250787
ब्रांच : 24 रामानाथन स्ट्रीट, टी. नगर
मद्रास 600017 • फोन : 4346325

ISBN 81-7070-196-1

Rs 17.00